Toppersnotes
Unleash the topper in you

REET

राजस्थान शिक्षक पात्रता परीक्षा

Board of Secondary Education, Rajasthan

Level – II

(कला वर्ग)

भाग – 4

इतिहास एवं कला–संस्कृति

SIERRA INNOVATIONS

REET LEVEL – 2 (कला वर्ग) – 2022

इतिहास

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ संख्या
	भारत का इतिहास	
1.	प्राचीन इतिहास	1
2.	सिन्धु घाटी सभ्यता	3
3.	वैदिक काल	9
4.	महाजनपद	13
5.	गुप्त एवं मौर्य सम्राज्य	14
6.	जैन एवं बौद्ध धर्म	34
7.	गुप्तोत्तर काल	41
8.	वृहत्तर भारत	60
9.	भक्ति एवं सूफी आन्दोलन	62
10.	मुगल काल एवं मुगल व राजपूत सम्बन्ध	74
11.	भारतीय राज्यो के प्रति ब्रिटिश नीति	90
12.	भारतीय अर्थव्यवस्था पर ब्रिटिश प्रभाव	94
13.	1857 का विद्रोह	101
14.	पुनर्जागरण एवं सामाजिक सुधार	104
15.	राष्ट्रीय आन्दोलन या स्वतन्त्रता आन्दोलन	107
	राजस्थान का इतिहास एवं कला संस्कृति	
1.	राजस्थान की प्राचीन सभ्यताएँ एवं जनपद	119
2.	राजस्थान के प्रमुख राजवंशो का इतिहास	125
3.	राजस्थान 1857 की क्रांति	161
4.	किसान आन्दोलन	166
5.	राजस्थान के प्रजामण्डल	174
6.	राजस्थान के प्रमुख व्यक्तित्व/स्वतन्त्रता सेनानी	180

7.	राजस्थान का एकीकरण	189
8.	राजस्थान की चित्रकला एवं लोक कला	194
9.	राजस्थान के लोक नृत्य एवं लोक नाट्य	219
10.	राजस्थान के लोक देवता एवं संत	233
11.	राजस्थान के लोक संगीत	262
12.	राजस्थान की वेशभूषा एवं आभूषण	265
13.	राजस्थान के मेले एवं त्योहार	269
14.	राजस्थान की भाषा एवं साहित्य	281
15.	राजस्थान की विरासत	292

गुर्जर प्रतिहार

- बादामी के चालुक्य शासक पुलकेशिन II का कर्नाटक से एक ऐहोल अभिलेख प्राप्त हुआ है इसकी भाषा संस्कृत है और रचनाकार रविकीर्ति है।
- ऐहोल अभिलेख के अनुसार पुलकेशिन II ने नर्मदा के किनारे हर्षवर्धन को पराजित किया था।

गुर्जर प्रतिहार/राजपूत काल/सामन्त काल (700–1200 ई.)

उत्पत्ति	संस्थापक	त्रिपक्षीय संघर्ष
1. पृथ्वीराज रासौ के अनुसार गुरू वशिष्ठ के अग्निकुण्ड से प्रतिहार, परमार, चालुक्य, चौहान उत्पन्न हुए	हरिश्चन्द्र (रोहलिद्धी)	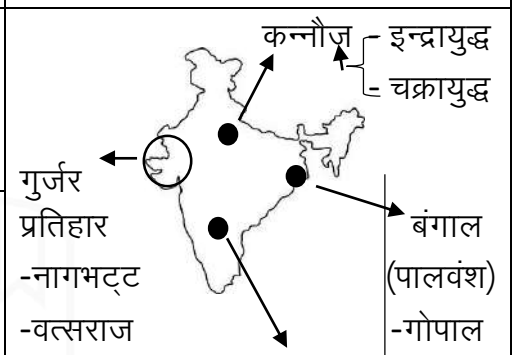
2. जेम्स टॉड के अनुसार खंजर जाति से विदेशी	पुत्र रज्जिल–राजधानी– मंडौर दह भोगभट्ट कदक	
3. हेनसांग के अनुसार गुर्जर–प्रतिहार क्षत्रिय थे।	शिलालेख – घटियाला शिलालेख	
4. मिहिरभोज के ग्वालियर अभिलेख में लक्ष्मण का अवतार बताया गया।		

- 647 ई. में हर्षवर्धन की मृत्यु के बाद कन्नौज को प्राप्त करने के लिए पाल, प्रतिहार, राष्ट्रकूटों के मध्य त्रिपक्षीय संघर्ष लड़ा गया जिसमें कन्नौज अंतिम रूप से गुर्जर प्रतिहारों को प्राप्त हुआ।
- डॉ. आर. सी. मजूमदार के अनुसार गुर्जर एक भौगोलिक शब्दावली है जबकि प्रतिहार पद की जानकारी देता है जो कि राजा के महल के बाहर रक्षक का कार्य किया करते थे।
- हेनसांग ने गुर्जर प्रतिहारों कें क्षेत्र को कु.चे.लो. व राजधानी को पीलोभोलो कहा है।
- अरब यात्री अलमसूदी के गुर्जर प्रतिहारों के क्षेत्र के लिए अलगुर्जर, गुर्जर प्रतिहारों के लिए जुर्ज तथा राजा के लिए बौरा शब्द का प्रयोग किया है।
- डॉ. गौरीशंकर औझा के अनुसार गुर्जर–प्रतिहार शासक क्षत्रिय थे।
- मुंहणोत नैणसी के अनुसार गुर्जर प्रतिहारों की कुल 26 शाखाएँ थी। जिसमें से 2 शाखा महत्त्वपूर्ण थी –
  1. मंडोर के गुर्जर–प्रतिहार
  2. भीनमाल के गुर्जर–प्रतिहार
- पुलकेशिन द्वितीय के ऐहोल अभिलेख से भी गुर्जर प्रतिहार शासकों के बारे में जानकारी मिलती है।
- **संस्थापक** – जोधपुर से प्राप्त घटियाला शिलालेख के अनुसार गुर्जर प्रतिहार वंश का संस्थापक हरिश्चन्द्र को माना जाता है। हरिश्चन्द्र के पुत्र रज्जिल ने मंडोर को अपनी राजधानी के रूप में स्थापित किया।
- **रज्जिल** – रज्जिल के द्वारा राजसूय यज्ञ का आयोजन किया गया। यह राजसूय यज्ञ राजा के राज्याभिषेक के अवसर पर किया जाता था। रज्जिल के दरबारी विद्वान नरहरी ने 'रज्जिल' को राजा की उपाधि दी है।

- **नरभट्ट** – नरभट्ट को गुरु व ब्राह्मणों का संरक्षक कहा गया है।
  हेनसांग ने नरभट्ट के लिए पेल्लोपेली शब्द का प्रयोग किया है, जिसका अर्थ है – साहसिक कार्य करने वाला।
- नागभट्ट नामक व्यक्ति गुर्जर–प्रतिहार शासक बना। इसने अपनी राजधानी 'मंडोर' से मेड़ता स्थानान्तरित की थी।

भीनमाल (जालौर) के गुर्जर–प्रतिहार

यहाँ के शासकों ने स्वयं को रघुवंशी प्रतिहार कहा।

नागभट्ट प्रथम – 730 – 760 ई.
उपाधि – नागावलोक, मल्लेच्छों का नाशक, नारायण की मूर्ति का प्रतीक
राजधानी – भीनमाल (जालौर)

- नागभट्ट प्रथम ने उज्जैन को अपनी दूसरी राजधानी के रूप में स्थापित किया जो कि शिक्षा का एक प्रमुख केन्द्र माना गया।
- उज्जैन में नागभट्ट I के द्वारा हिरण्य गर्भदान यज्ञ का आयोजन किया गया जिसका उद्देश्य पुत्र रत्न की प्राप्ति करना था।
- नागभट्ट प्रथम ने राष्ट्रकूट शासक दन्तिदुर्ग को भी इस यज्ञ के दौरान आमंत्रित किया था, अतः इस समय त्रिपक्षीय संघर्ष की शुरूआत नहीं हुई थी।
- मिहिरभोज के ग्वालियर अभिलेख में नागभट्ट I को मलेच्छों का नाशक कहा गया।
- पुलकेशियन द्वितीय के ऐहोल अभिलेख में नागभट्ट I को गुर्जर प्रतिहारों का वास्तविक संस्थापक कहा गया।
- नागभट्ट प्रथम के बाद कक्कुल व देवराज गुर्जर प्रतिहार शासक बने।

वत्सराज – 783 – 95 ई.
उपाधि – रणहस्तिन (युद्ध का हाथी)
जयवराह – दुग्गल नामक ब्राह्मण के द्वारा दी गयी क्योंकि वत्सराज ने वैष्णव धर्म को संरक्षण प्रदान किया था।

- वत्सराज के काल में त्रिपक्षीय संघर्ष की शुरूआत हुई।
- वत्सराज ने कन्नौज के शासक इन्द्रायुद्ध को पराजित करके कन्नौज पर अधिकार किया।
- बंगाल के शासक धर्मपाल को मुंगेर के युद्ध में पराजित किया, परन्तु वत्सराज राष्ट्रकूट शासक ध्रुव के हाथों पराजित हुआ।
  इस प्रकार वत्सराज के काल में कन्नौज पहली बार गुर्जर–प्रतिहारों को प्राप्त हुआ और वत्सराज के काल में कन्नौज गुर्जर प्रतिहारों के हाथों से निकल गया।
- वत्सराज के काल में गुर्जर प्रतिहारों का साम्राज्य विस्तार बंगाल तक हुआ।
- राष्ट्रकूट शासक ध्रुव ने अपनी उत्तर भारत विजय के उपलक्ष्य में गंगा व यमुना को अपने प्रतीक चिह्न के रूप में अपनाया था।
- वत्सराज के काल में संस्कृत भाषा में बली प्रबंध नामक लेख की रचना हुई जिसमें गुर्जर–प्रतिहार काल में प्रचलित सती प्रथा की जानकारी मिलती है।
- वत्सराज शैव मत का अनुयायी था। वत्सराज के काल में जोधपुर के औसियां नाम स्थान पर महावीर स्वामी के मंदिर का निर्माण हुआ। यह पश्चिमी भारत का सबसे प्राचीन जैन मंदिर माना जाता है। गुर्जर–प्रतिहार शासकों द्वारा महामारू शैली में मंदिरों का निर्माण करवाया गया था। महामारू शैली से तात्पर्य है – एक स्थान पर एक से ज्यादा मंदिरों का निर्माण।

- वत्सराज के काल में उद्योतन सूरी व जिनसेन सूरी नामक विद्वान हुए। उद्योतन सूरी के द्वारा ''कुवलयमाला'' तथा जिनसेन सूरी के द्वारा ''हरिवंश पुराण'' की रचना की गयी।

नागभट्ट द्वितीय (795–833 ई.)

- उपाधि – परमेश्वर, परमभट्टारक, महाराजाधिराज
- मिहिरभोज के ग्वालियर अभिलेख में नागभट्ट द्वितीय को कर्ण कहा गया। नागभट्ट द्वितीय के काल में त्रिपक्षीय संघर्ष हुआ। इस समय राष्ट्रकूट शासक गोविन्द तृतीय था। गोविन्द तृतीय ने नागभट्ट द्वितीय को पराजित किया था।
- गोविन्द तृतीय को जब दक्षिण में व्यस्त था तब नागभट्ट द्वितीय ने कन्नौज पर आक्रमण करके चक्रायुद्ध को पराजित किया और कन्नौज में गुर्जर प्रतिहारों की एक शाखा स्थापित की थी। नागभट्ट द्वितीय ने बंगाल के शासक धर्मपाल को भी हराया था।
- नागभट्ट द्वितीय के काल में जोधपुर के बुचकला नामक स्थान पर शिव–पार्वती व विष्णु मंदिर का निर्माण हुआ।
- नागभट्ट द्वितीय के बारे में जानकारी चन्द्रप्रभुसूरी की पुस्तक प्रभावक चरित्र से प्राप्त होती है।
- नागभट्ट द्वितीय के द्वारा गंगा में समाधि ली गयी थी।

रामभद्र (833–36 ई.)

रामभद्र के काल में मंडोर के गुर्जर प्रतिहार स्वतंत्र होने लगे। बंगाल के पाल शासकों ने भी गुर्जर प्रतिहारों के क्षेत्र पर आक्रमण करना शुरू कर दिया। अतः रामभद्र की हत्या उसके पुत्र मिहिरभोज के द्वारा कर दी गयी। मिहिरभोज को गुर्जर प्रतिहार शासकों का पितृहन्ता कहा जाता है।

मिहिरभोज (836–855 ई.)

- उपाधि – आदिवराह (जयवराह की उपाधि वत्सराज ने धारण की थी।)
  प्रभासपाटन
  संपूर्ण पृथ्वी का विजेता (बग्रमा अभिलेख, उत्तरप्रदेश)
- मिहिर – सूर्य का प्रतीक
- जानकारी के स्त्रोत
  - ग्वालियर अभिलेख (मध्यप्रदेश)
  - सागरताल प्रशस्ति (मध्यप्रदेश)
  - बग्रमा अभिलेख
- वैष्णव धर्म को संरक्षण दिये जाने के कारण आदिवराह की उपाधि ली जिसकी जानकारी ग्वालियर अभिलेख से प्राप्त होती है।
- मिहिरभोज ने राष्ट्रकूट शासक कृष्ण तृतीय को पराजित करके कन्नौज व मालवा पर अधिकार किया था।
- अरब यात्री सुलेमान ने मिहिरभोज के काल में भारत की यात्रा की थी। सुलेमान मिहिरभोज को मुसलमानों का कट्टर शत्रु व इस्लाम की दीवार कहता है। मिहिरभोज ने अरब आक्रमणकारी जुनैद खाँ को पराजित किया और ताजिये निकाले जाने पर प्रतिबंध लगा दिया था।
- मिहिरभोज के द्वारा चाँदी व ताँबे के सिक्कों का प्रचलन करवाया व इन सिक्कों पर श्रीमद् आदिवराह अंकित करवाया था।

महेन्द्रपाल प्रथम (885–910 ई.)

- उपाधि – रघुकुल, चूडामणि, निर्भय नरेश
- राजशेखर महेन्द्रपाल प्रथम के दरबारी कवि थे। राजशेखर के द्वारा निम्न पुस्तकों की रचना की गयी– कर्पूर मंजरी, बाल रामायण, विद्धशाल भंजिका, भुवनकोश, हरविलास, काव्य मीमांसा

महिपाल प्रथम (914–43 ई.)

- उपाधि – रघुकुल मुक्तामणी, मुकुटमणि, आर्यावर्त का महाराजाधिराज
- राजशेखर महिपाल I के भी दरबारी विद्वान थे।
- महिपाल प्रथम के काल में बगदाद निवासी 'अलमसूदी' ने भारत की यात्रा की थी।
- 1018 ई. में महमूद गजनवी ने कन्नौज पर आक्रमण किया था। इस समय कन्नौज का शासक राजपाल/राज्यपाल था।
- 11वीं शताब्दी में गहड़वाल वंश के शासकों ने कन्नौज पर अधिकार किया था। कन्नौज का अंतिम शासक यशपाल था।

राजस्थान मे किसान आंदोलन

राजस्थान मे किसान आंदोलन का मुख्य कारण अत्यधिक कर व लागबाग होना था।

बिजौलिया किसान आंदोलन 1897 से 1941

- **प्राचीन नाम** – विजयावल्ली था जिसका उल्लेख बिजौलिया शिलालेख में मिलता है।
- बिजौलिया ठिकाने का संस्थापक अशोक परमार को माना जाता है।
- खानवा युद्ध के बाद महाराणा सांगा द्वारा यह ठिकाना अशोक परमार को दिया गया।
- बिजौलिया से भैसरोडगढ तक के क्षेत्र को उपरमाल क्षेत्र कहा जाता है। जहाँ धाकड जाति के किसानो की बहुलता है।
- इस आंदोलन का मुख्य कारण अत्यधिक कर व लाग बाग को माना जाता है।
- जो कुल 84 प्रकार के थे। यह आंदोलन भारत का प्रथम अहिंसक किसान आंदोलन तथा राज. का सर्वाधिक लम्बे समय तक चलने वाला माना जाता।
- यह आंदोलन तीन चरणो में सम्पन्न हुआ।
  प्रथम चरण 1897 से 1916 – साधु सीताराम दास
  दूसरा चरण 1916 से 1927 – विजय सिंह पथिक
  तीसरा चरण 1927 से 1941 – जमनालाल बजाज

प्रथम चरण

- इस चरण में बिजौलिया के ठाकुर कृष्ण सिंह ने भूमि कर में 1.5 गुणा वृद्धि की जिसका किसानों ने विरोध किया।
- 1897 में गिरधारी पुरा गाँव में किसानों की बैठक हुई। गंगाराम धाकड के मृत्यु भोज पर जिसका नेतृत्व साधु सीताराम दास ने किया।
- किसानों द्वारा नान जी पटेल और ठाकरी पटेल को ठाकुर कृष्ण की शिकायत को लेकर महाराणा फतेहसिंह के पास भेजा गया।
- महाराणा द्वारा बिजौलिया की जाँच हेतु हामिद हुसैन को बिजौलिया भेजा गया जिसने अपनी रिपोर्ट किसानों के पक्ष में प्रस्तुत की।
- कृष्ण सिंह ने 1903 में चवरी कर/न्योत/विवाह कर लगाया जो प्रति विवाह 5 रू था।
- 1906 में पृथ्वी सिंह बिजौलिया का ठाकुर बना। इसने किसानों पर तलवार बंधाई कर/उत्तराधिकार शुल्क लगाया।
- 1914 में केशरी सिंह बिजौलिया का ठाकुर बना। महाराणा ने अमरसिंह राणावत को इसका संरक्षक बनाया।
- अमरसिंह द्वारा भूमि कर घटाकर 1/3 कर दिया गया।
- केशरी सिंह के समय ही बिजौलिया के किसानों से युद्ध कर वसूला गया।

द्वितीय चरण

- 1916 से 1927 विजयसिंह पथिक
- इनका मूल नाम भूपसिंह था।
- उत्तर प्रदेश के बुलंदशहर जिले के गुढावली गाँव में गुर्जर परिवार से संबंधित थे। अजमेर की टोडगढ जेल से मुक्त होने के बाद इन्होंने विजय सिंह पथिक नाम रखा।
- पथिक द्वारा 1917 में उपरमाल पंच बोर्ड की स्थापना की गई।
- इसमें कुल 13 सदस्य थे। इसका अध्यक्ष मन्नालाल पटेल को बनाया गया।
- पथिक द्वारा उपरमाल डंका समाचार पत्र का प्रकाशन किया गया।
- पथिक के आग्रह पर गणेश शंकर विधार्थी ने कानपुर से स्वयं द्वारा प्रकाशित प्रताप समाचार पत्र में इस आंदोलन का उल्लेख किया।
- इसी पत्र द्वारा बिजौलिया आंदोलन को राष्ट्रीय स्तर पर प्रचारित किया गया।
- पथिक द्वारा लिखा गया "झंडा नीचे नही झुकाना प्राण भले गवाना"।

- माणिक्य लाल वर्मा द्वारा भी "पंछीडा" नामक गीत की रचना की गई।
- माणिक्य लाल वर्मा के साथ मिलकर पथिक ने शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की।
- 1919 में महाराणा फतेहसिंह द्वारा बिन्दूलाल भट्टाचार्य के नेतृत्व में तीन सदस्य समिति का गठन किया गया और इसे बिजौलिया भेजा गया।
- इसने अपनी रिपार्ट किसानों के पक्ष में प्रस्तुत की।
- इस समिति के अन्य सदस्य ठा. अमरसिंह व अफजल अली थे।
- 1920 में महाराणा द्वारा दूसरी समिति का गठन किया गया जिसके सदस्य रमाकान्त मालवीय ठा., राजसिंह व तख्तसिंह थे।
- इस समिति ने उदयपुर में किसानों के प्रतिनिधि मण्डल से भेंट की इस मण्डल में माणिक्यलाल वर्मा सहित 8 सदस्य थे।
- 1922 में A.G.G हॉलेण्ड ने 84 में से 35 लगान समाप्त करने की घोषणा की, परन्तु उसे लागू नही किया गया।
- 10 सितम्बर 1923 को पथिक को कुंभलगढ दुर्ग मे बंदी बना लिया गया। ये 1927 में मुक्त हुए इस दौरान बारानी भूमि पर कर बढ़ा दिया गया।

तीसरा चरण

- 1927–1941, जमनालाल बजाज
- इन्होने हरिभाऊ उपाध्याय को अपना प्रतिनिधि नियुक्त किया।
- इस चरण में माणिक्य लाल वर्मा सर्वाधिक सक्रिय थे।
- वर्मा जी ने अंगेज अधिकारी विलकिनसन तथा मेवाड अधिकारी टी.राघवाचार्य के सहयोग से हॉलैण्ड की घोषणा को लागू करवाया। अतः आंदोलन समाप्त हुआ।
- गाँधी जी इस आंदोलन की जाँच हेतु अपने नीजी सचिव महादेव देसाई को भेजा था।
- प्रेमचन्द ने अपने उपन्यास "रंगभूमि" में जिस किसान आंदोलन का उल्लेख किया है उसकी रूप रेखा बिजौलिया आंदोलन से प्रेरित है।

बेंगू किसान आंदोलन (1921–1923) चित्तौडगढ

- आंदोलन का मुख्य कारण – अत्यधिक कर व लाग बाग
- प्रारम्भिक केन्द्र – मेनाल (महादेव मंदिर) भीलवाडा
- नेतृत्व कर्ता – रामनारायण चौधरी
- तत्कालीन ठाकुर – अनुपसिंह
- सर्वाधिक सक्रिय संगठन – राज. सेवा संघ
- राजस्थान सेवा संघ व अनूपसिंह के मध्य एक समझौता हुआ। जिसे महाराणा ने वॉल्शेविक संधि की संज्ञा दी।
- 1922 में ट्रेंच आयोग का गठन किया गया। इस आयोग ने 1923 में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की जिसमें सभी करों को जायज ठहराया।

गोविंदपुरा हत्याकांड (13 जुलाई 1923)

- ट्रेंच अधिकारी द्वारा यह हत्याकांड करवाया गया।
- इसमें रूपाजी धाकड, कृपाजी धाकड शहीद हुए।
- आंदोलन के अंतिम भाग में विजयसिंह पथिक ने नेतृत्व किया। अन्ततः 34 लाग बाग समाप्त कर दी गई। आंदोलन समाप्त हुआ।

अलवर किसान आंदोलन (1922–1925)

- राजा – जयसिंह/जयदेव सिंह
- जयसिंह द्वारा भूमिकर में वृद्धि कर दी गई।
- तात्कालिक कारण जंगली सूअरों को मारने पर प्रतिबंध लगाना।

नीमूचणा हत्याकाण्ड (14 मई 925)

- किसानों की सभा पर कमाण्डर छाजू सिंह ने गोली चलाने का आदेश दिया। कुल 700 किसान शहीद हुए।
- गाँधी जी ने यंग इंडिया समाचार पत्र में इसे दोहरी डायरशाही कहा।
- रियासत समाचार पत्र में इस हत्याकाण्ड की तुलना जलियावाला बाग हत्याकाण्ड से की गई।
- अलवर महाराजा ने इस हत्याकाण्ड की जाँच हेतु जनरल छजूसिंह की अध्यक्षता में एक आयोग का गठन किया। अन्य सदस्य – रामचरण लाल, ठा. सुल्तानसिंह, सिविल जज
- राष्ट्रीय कार्यकर्ताओं द्वारा भी एक समिति क मणिलाल कोठारी की अध्यक्षता में गठित की जिसके सचिव रामनारायण चौधरी थे।

मेव किसान आंदोलन, 1932

- तात्कालीन कारण कुरान की शिक्षा पर रोक लगाना।
- नेतृत्वकर्ता – चौधरी यासीन खाँ, मोहम्मद खाँ
- इस आंदोलन के दौरान अंग्रेजों ने राजा जयसिंह को देश निकाला दिया तथा कुरान की शिक्षा पर रोक हटा दी गई।
- 1932 में राज्य सरकार ने रजिस्ट्रेशन ऑफ सोसायटी एक्ट पारित किया। जिसमें यह प्रावधान किया गया कि पूर्व में या बाद मे स्थापित सभी संगठनों को इसके अन्तर्गत पंजीकृत करना होगा।
- मेवों ने इस अधिसूचना व अधिनियम का विरोध किया।
- 6 अक्टूबर 1932 को ऑल इंडिया मुस्लिम कांफ्रेस का एक प्रतिनिधि मण्डल अपने अध्यक्ष डॉ. मुहम्मद इकबाल के नेतृत्व में भारत के वायसराय से शिमला में मुलाकात की व एक ज्ञापन पेश किया।

बूँदी किसान आंदोलन, (1922–27)

- कारण अत्यधिक कर व लागबाग
- नेतृत्व कर्ता – पं. नयूनूराम शर्मा
- प्रारम्भिक केन्द्र – बरड।
- इस आंदोलन के समय राजस्थान सेवा संघ द्वारा पत्रक प्रकाशित किया गया।
- जिसका शीर्षक "बूँदी राज्य में स्त्रियो पर अत्याचार"।
- यह आंदोलन राजा व रियासत के विरूद्ध न होकर प्रशासन के विरूद्ध था।

डाबी हत्याकाण्ड (2 अप्रैल 1923)

डाबी नामक स्थान पर पुलिस अधिकारी इकराम हुसैन द्वारा किसान सभा पर गोलीकाण्ड किया गया। जिसमें नानक भील व देवालाल गुर्जर शहीद हुए। इस समय में दोनों मंच से झण्डा गीत की प्रस्तुति दे रहे थे।

बीकानेर किसान आंदोलन (1927–1941)

- शासक – गंगा सिंह – दमन उत्पीडन निष्कासन की नीति अपनायी।
- गंगा सिंह द्वारा 1927 में गंगनहर का निर्माण करवाया गया। जो भारत की प्रथम सिंचाई परियोजना थी।
- 1929 में जागीरदारों द्वारा मिलकर जमीदारा एसोसिएशन का गठन किया गया। जिसके अध्यक्ष दरबारा सिंह थे।
- बीकानेर रियासत में महाजन ठिकाना प्रथम श्रेणी का ठिकाना माना जाता ।
- इस रियासत में सर्वाधिक अत्याचार, इसी ठिकाने में हुए।
- चन्दनमल बहड़ द्वारा किसानों का नेतृत्व किया गया परन्तु उन्हे बंदी बना लिया गया।
- इस रियासत में किसान आंदोलन का क्रूरता से दमन किया गया है।

दुधवा खारा किसान आंदोलन (1944–1948)

- ठाकुर सूरजमल
- **नेतृत्व** – चौधरी हनुमान सिंह
- **प्रमुख सहयोगी** – मधाराम वैध
- **प्रमुख कारण** – किसानों को जोत से बेदखल करना।
- **कांगड काण्ड – 1946** यहां किसानो की सभा पर अत्याचार हुआ । यहाँ महिलाओं का नेतृत्व खेतू बाई द्वारा किया गया। 1948 में बीकानेर में उत्तरदायी शासन की घोषणा के बाद यह आंदोलन समाप्त हुआ।

मारवाड किसान आंदोलन (1923–1947)

- 1918 में चाँदमल सुराणा द्वारा मरूधर हित कारणी सभा की स्थापना की गई।
- इस रियासत में 1920 में तौल आंदोलन चलाया गया। जिसका कारण 100 तौला प्रति सेर से घटाकर 80 तौला करना था।
- 1922 में पुनः 100तौला/सेर कर दिया गया । यह आंदोलन समाप्त हुआ।
- 1923 में मारवाड रियासत से मादा पशुओं के निष्कासन पर से रोक हटा ली गई। इसके विरोध में आंदोलन हुआ। अतः पुनः रोक लगा दी गई।
- 1931 में मारवाड में बिगोड़ी कर में वृद्धि कर दी गई।
- 1934 में पुनः इसमें कमी कर दी गई।
- सर्वाधिक तिहरा शोषण मारवाड रियासत में हुआ था।
- मारवाड़ रियासत में कुल राजपूताना का 26% भाग शामिल था।
- मारवाड रियासत की कुल भूमि का 13% खालसा भूमि व 87% जागीर भूमि थी।
- आंदोलन का कारण अत्यधिक कर व लाग बाग।
- नेतृत्व कर्ता – जयनारायण व्यास
- जयनारायण व्यास ने 1923 में मरूधर हित कारणी सभा का पुनर्गठन किया और नाम बदलकर मारवाड हितकारिणी सभा रखा।
- 1938 में कृषक सुधारक मंच की स्थापना की गई।
- 1941 में बलदेव राम मिर्धा की अध्यक्षता में मारवाड किसान संघ की स्थापना की।
- 5 मार्च 1932 को मारवाड़ हितकारिणी सभा व मारवाड़ यूथ लीग को असंवैधानिक संगठन घोषित कर दिया।
- छगनराज चौपसनीवाला व अचलेश्वर प्रसाद शर्मा को गिरफ्तार कर क्रमशः शेरगढ़ व दौलतपुरा के किले में नजरबंद कर दिया गया।
- चंडावल काण्ड – 28 मार्च 1942 को पूरे मारवाड़ में उत्तरदायी शासन दिवस मनाने का निर्णय लिया। लेकिन चंडावल ठाकुर ने इसकी अनुमति नही दी। इसके बावजूद लोक परिषद के कार्यकर्ता चंडावल पहुँचे जिन पर आक्रमण कर दिया गया।
- 14 फरवरी 1948 को The Direct Management of Jagir Estates Act 1949 बनाकर जागीरदारों से लगान वसूली शक्तियाँ छीन ली गई।

डाबडा हत्याकाण्ड – (13 मार्च 1947)

- इस हत्याकाण्ड में 12 व्यक्ति मारे गये। डिडवाना के ठाकुर द्वारा यह अत्याचार किया गया।
- मथुरादास माथुर के नेतृत्व में प्रजामण्डल और किसान आंदोलन के कार्यकर्ता यहाँ एकत्रित हुए थे।

शेखावाटी किसान आंदोलन (1922–1947)

- शेखावाटी किसान आंदोलन सीकर जिले से प्रारम्भ हुआ। यह आंदोलन पंच पानों में फैला था।
- **पंच पाने** – डूंडलोद, नवलगढ, बिसाऊ, अलसीसर और मंडावा।
- आंदोलन का प्रमुख कारण अत्यधिक कर व लाग बाग – बेगार।

- **नेतृत्वकर्ता** – रामनारायण चौधरी
- सीकर के तत्कालीन ठाकुर कल्याण सिंह ने भूमि कर में 1.5 गुणा की वृद्धि की।
- शेखावाटी में बेगार व्यवस्था का किसानों ने सर्वाधिक विरोध किया।
- 1921 में चिडावा सेवा समिति की स्थापना की गई।
- चौधरी हरलाल सिंह ने सीकर क्षेत्र में किसान पंचयतो का गठन किया।
- प्यारे लाल गुप्ता ने चिडावा में रहते हुए गाँधीवादी पद्धति से जनजागरण किया। अतः इन्हें चिडावा का गाँधी कहा जाता है।
- इन्होने चिडावा में श्री कृष्ण पुस्तकालय की स्थापना की।
- भरतपुर के शासक बृजेन्द्र सिंह के छोटे भाई देशराज ने 1931 में राजस्थान जाट महासभा की स्थापना की व शेखावाटी में जनजागरण किया।
- देशराज के प्रयासो से 1934 में सीकर के अलावा पलसाणा नामक स्थान पर जाट प्रजापति महायज्ञ का आयोजन किया गया जिसमें 3.50 लाख से अधिक लोगों ने भाग लिया।
- किशोरी देवी के नेतृत्व में सीकर के कटराथल नामक स्थान पर 25 अप्रैल 1934 को विशाल महिला सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें 10 हजार से अधिक महिलाओं ने भाग लिया।

जयसिंहपुरा हत्याकाण्ड (21 जून 1934) – यह हत्याकांड ईश्वरी सिंह द्वारा करवाया गया। अतः इस पर जयपुर रियासत में मुकदमा चला। जेल की सजा हुई। रिंकू राम ने गवाही दी।

- ऐसा प्रथम बार हुआ जब किसान आंदोलन के दौरान अत्याचारी को सजा हुई हो।
- अगस्त 1934 में अंग्रेज अधिकारी w.t वैब की अध्यक्षता से समझौता हुआ तथा बेगार को समाप्त करने और भूमि कर कम करने की घोषणा हुई। इसका पालन किया गया।
- कूदन गाँव और खुंडी गाँव में किसानों की सभाऐं हुई। जहाँ अप्रैल 1935 में हत्याकाण्ड किये गये।
- कूदन गाँव हत्याकाण्ड की चर्चा ब्रिटेन के हाऊस ऑफ कॉमन्स में लोरेन्स नामक अंग्रेज द्वारा की गई।
- कूदन हत्याकाण्ड – 25 अप्रैल 1935 को हुआ।
- किसानों से लगान वसूली करने हेतु मलिक मोहम्मद हुसैलन के नेतृत्व में भेजा गया।
- खुड़ी गाँव नरसंहार की आलोचना खण्डवा से प्रकाशित 'कर्मवीर' मे तथा गाँधी जी के 'हरिजन' समाचार पत्रों में की गई।
- 26 मई 1935 सीकर दिवस मनाने का निश्चय किया।
- प्रजामण्डल ने 1940 ई. में किसानों की समस्याओं पर विचार करने के लिए चार सदस्यों की एक समिति गठित की जिके सदस्य हीरालाल शास्त्री, टीकाराम पालिवाल, सरदार हरलाल सिंह और विद्याधर कुलहरी थे। इन्होने 25 मार्च 1941 को प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जिसे राज्य के भूमि सुधारों के इतिहास में मैगनाकार्टा कहा जा सकता है।
- इस हत्याकाण्ड में निम्नलिखित व्यक्ति शहीद हुए।
  - चेतराम
  - रिंकूराम
  - तुलछाराम
  - आशाराम
- इस आंदोलन के दौरान जमनालाज बजाज ने ग्रामीण क्षेत्रों में घूमकर जनजागरण किया।
- नरोत्तम लाल जोशी ने शेखावाटी में "जकात आंदोलन" चलाया।
- हीरालाल शास्त्री के प्रयासों से 1946 में किसानों को बेगार व करों में राहत दी गई और यह आंदोलन समाप्त हुआ।

जाट किसान आंदोलन (1880) – यह आंदोलन मेवाड क्षेत्र में किया गया जो राज. का प्रथम किसान आंदोलन था जो मातृकुण्डिया से शुरू हुआ। सामन्ती अत्याचार के विरूद्ध था।

भू–राजस्व पद्धतियां

1. **काँकड कूँत पद्धति –** इसमें खडी फसल पर उत्पादन के अनुमान के आधार पर भूमि कर की वसूली की जाती थी।
2. **डोरी पद्धति –** भूमि को डोरी से मापकर प्रति विद्या, भूमि कर, निर्धारण और वसूली ।
3. **बँटाई पद्धति –** यह तीन प्रकार की थी–
   - **खेत बँटाई –** खडी फसल के आधार पर बँटाई करना।
   - **लाग बँटाई –** कटी हुई फसल के बंडलों की गिनती के आधार पर कर निर्धारण करना।
   - **रास बँटाई –** अन्न के ढेर के आधार पर बँटाई करना।
4. **मुकाता पद्धति –** इसमें सम्पूर्ण गाँव का भूमि कर गाँव के चौधरी द्वारा वसूल किया जाता था तथा चौधरी से ठाकुर द्वारा भूमि कर की वसूली की जाती थी।
5. **बिगोडी –** इसमें प्रति बिघा भूमि कर का निर्धारण होता था।

कर व लाग बाग

ग्रह कर – विभिन्न रियासतों में इसे अलग–अलग नामों से जाना जाता है:–

1. जयपुर – घर की बिछोती
2. जोधपुर – घर गिनती किवाड
3. मेवाड – घर बराड
4. बीकानेर – धुँआ बाछ

जलावन लकडी पर कर

1. जयपुर – दरखत की बिछोती
2. जोधपुर – कबाडा बाब
3. उदयपुर – खड, लाकड
4. बीकानेर – काठ

आयात – निर्यात कर

1. जयपुर – सायरकर
2. जोधपुर – सायरकर
3. उदयपुर – मापा बारूता
4. बीकानेर – जकात
5. जैसलमेर – दाण

जल कर

1. आबियाणा – सिंचाई कर।
2. खडसीसर – तालाबों से पीने के पानी पर कर।

- **अखराई कर –** जमा राशि की रसीद प्राप्ति हेतु
- **गनीम बराड़ –** मेवाड में युद्ध कर।
- **जावामाल/सिंगोटी –** मवेशियों के क्रय–विक्रय पर कर।
- **खूँटा बँधी –** प्रति ऊँट ली जाने वाली राशि ।
- **खूँटा फिराई –** ऊँट के अलावा अन्य पशुओं पर कर।
- **घासमरी –** बडे पशुओं के सार्वजनिक भूमि पर चराई कर।
- **पानचराई –** छोटे पशुओं के सार्वजनिक भूमि पर चराई कर।
- **जमी चौथ –** भूमि के क्रय–विक्रय पर कर।

- **हीद भराई** – मालियो से ली जाने वाली राशि।
- **ईच** – मालणियों से लिया जाने वाला कर।
- **काँसा परोसा** – सामान्य वर्ग द्वारा मंगल कार्य के अवसर पर ठाकुर को दिया जाने वाला भोजन या राशि।
- **खोळा** – संतान गोद लेने पर लगने वाला कर।
- **किणा** – वस्तु विनिमय पर लगाया गया कर।
- **चँवरी कर** – शादी पर लिया जाने वाला कर।
- **तलवार बँधाई कर** – अन्य नाम, पेशकशी, नजराना, केंद्र खालसा।
- **कमठा लाग** – भवन निर्माण हेतु प्रति घर ली जाने वाली राशि।
- **पावणा पावरा लाग** – ठाकुर के घर आये अतिथि के सत्कार हेतु ली जाने वाली राशि।

राजस्थान में जनजातीय आन्दोलन

भगत आन्दोलन – गरू गोविन्द गिरि।

- राजस्थान के डुँगरपुर व बाँसवाड़ा में भील जनजाति में सामाजिक जागृति उत्पन्न करने व भीलों को एकत्रित करने हेतु चलाया गया आन्दोलन।
- गुरू गोविन्द गिरि का जन्म 20 दिसम्बर 1858 को डुँगरपुर के बाँसियाँ गाँव के एक बंजारा परिवार में हुआ।
- गुरू गोविन्द गिरि ने 1883 ई. मानगढ़ पहाड़ी (बाँसवाड़ा) पर सम्प सभा की स्थापना की।
- 17 नवम्बर 1913 को (मार्ग शीर्ष पूर्णिमा) मानगढ़ पहाड़ी पर एकत्रित भीलों पर कर्नल शटन के आदेश पर गोलियाँ चला दी जिसमें 1500 भील मारे गये।
- पुन्जा धीर को संतरामपुर व गुरू गोविन्द गिरी को अहमदाबाद की साबरमती जेल में रखा गया।
- मानगढ़ हत्याकाण्ड को राजस्थान में 'जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड' के नाम से जाना जाता है।
- अतिरिक्त सेशन जज फ्रेडरिक विलियम एलीसन व राजपूताना के मेजर ह्यूज ऑगस्टन केम्पेल गफ को ट्रिब्यूनल का सदस्य मनोनीत किया। इस ट्रिब्यूनल ने गुरू गोविन्द गिरि को मृत्युदण्ड तथा पुन्जा धीर को आजीवन करावास की सजा सुनायी।
- 1914 को आर.पी. बारो (कमीश्नर) ने गोविन्द गिरि की सजा को कम करते हुए 10 वर्ष की कठोर सजा में बदल दिया।
- 12 जुलाई 1923 को रिहा कर दिया। इसके बाद गुरू गोविन्द गिरि पंचमहल जिले के झालोद तालुका के कम्बोइ गाँव में जीवन व्यतीत किया। 30 अक्टूबर 1931 को उनका देहान्त हो गया।

एकी आंदोलन

- मोतीलाल तेजावत द्वारा भील क्षेत्र 'भोमट' में 1921 में चलाया गया।
- इस आन्दोलन का श्री गणेश झाड़ोल व फलासिया गाँवों मे किया गया।
- मोतीलाल तेजावत का जन्म 1886 ई. में कोलियारी गाँव में हुआ।
- इस आन्दोलन की शुरूआत चित्तौड़गढ़ के मातृ कुण्डिया स्थान से की गयी।
- 1921 में नीमड़ा गाँव में मोतीलाल तेजावत के नेतृत्व में भील इकट्ठे हुए। जिस पर मेवाड़ भील कोर के सैनिको ने अंधाधंध फायरिंग कर दी।
- नीमड़ा हत्याकाण्ड को दूसरा जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड कहा जाता हैं।
- 3 जून 1929 को ईडर राज्य की पुलिस ने खेडब्रह्म नामक गाँव में तेजावत को गिरफ्तार कर लिया व उदयपुर जेल में रखा गया।
- एकी आंदोलन मे सैनिको द्वारा, यह हत्याकाण्ड किया गया। जिसमें 1200 भील शहीद हुए।
- इस हत्याकाण्ड की जाँच हेतु मणिलाल कोठारी का भेजा गया।

राजस्थान की चित्रकला

- भारतीय चित्रकला का जनक :– रवि वर्मा (केरल)
- राजस्थान चित्रकला का जनक :– आनन्द कुमार स्वामी
  - ↳ 1916 में ग्रन्थ ''राजपूत पैंटिंग''
- इस पुस्तक में राजस्थान चित्रकला का सर्वप्रथम वैज्ञानिक विभाजन।
- राजस्थान में चित्रकला का आधुनिक जनक :– कुंदन लाल मिस्त्री
- राजस्थान चित्रकला की शुरूआत – 15 वीं से 16 वी. सदी के मध्य (1500 ई.)।
- कार्ल खण्डेलवाला के अनुसार राजस्थान चित्रशैली का स्वर्णकाल 17 वीं से 18 वी. सदी के मध्य।
- राजस्थान चित्रशैली की उत्पत्ति :– गुजराती/जैन/अंजता अपभ्रंश
- राजस्थान चित्रशैली के उपनामः– हिन्दू चित्रशैली – एन.सी. मेहता
- राजपूत चित्रशैली – गांगुली, हैवल
- राजस्थानी चित्रशैली – रामकृष्णदास/कर्नल टॉड
- तिब्बत के इतिहासकार तारानाथ शर्मा के अनुसार राजस्थान का प्रथम चित्रकार 7 वी. सदी में मरूप्रदेश– श्रृंगधर थे। ये यक्ष शैली अजन्ता शैली का एक रूप है इन्होंने पशु–पक्षियों पर सर्वाधिक चित्र बनाये थे।
- **राजस्थानी चित्रकला का प्रथम चित्रित ग्रंथ**
  - दसवैकालिका सूत्र चुर्णी/ओध निर्युक्ति सुक्त
  - 1060 ई. – ताम्रपत्र पर
  - जिनभद्र सूरी भूमिगत संग्रहालय एवं जैनभण्डार – जैसलमेर में सुरक्षित
- राजस्थान चित्रकला की जन्मभूमि – मेदपाट/मेवाड है।
- मेवाड चित्रशैली का प्रथम चित्रित ग्रंथ – श्रावक प्रतिक्रमण सूत्रचूर्णी (चित्रकार – कमलचंद)
  - ↳ इसे 1260 ई. में तेजसिंह के काल में बनाया था।
  - ↳ यह चित्रित ग्रंथ वर्तमान में सरस्वती भण्डार उदयपुर में सुरक्षित है।
- दर (भरतपुर) से प्राचीन पक्षियों के चित्रों की खोज :– डॉ. जगन्नाथ पुरी
- आलनिया (कोटा) से 5000 वर्ष पुराने शैलचित्रों की खोज :– विष्णुश्रीधर वाकणकर
- बैराठ सभ्यता (जयपुर) से प्राप्त प्राचीन चित्रों के आधार पर राजस्थान चित्रशैली को '' प्राचीन युग की सभ्यता'' कहा है।

शब्दावली

1. जोतदाना – चित्रों का संग्रह है।
2. चित्तेरा – चित्रकार को चितेरा कहा जाता है।
3. मोरनी मांडणा – इस चित्रकला का प्रचलन मीणा जनजाति में है।
4. डमका – चित्रों में प्रयुक्त रंग।

नोट – राजस्थान चित्रकला में पीले + लाल रंग सर्वाधिक प्रयोग।

प्रमुख चितेरा

1. भीलों का चितेरा/बारात का चितेरा :– बाबा गोवर्धन लाल (राजसमंद)
2. नीड का चितेरा :– सौभाग्य मल गहलोत (जयपुर)
3. श्वानों का चितेरा :– जगमोहन माथेडिया (जयपुर)
   - ↳ 3000 श्वानों के चित्र
   - ↳ लिम्का बुक में दर्ज

4. जैनशैली का चितेरा :– कैलाश वर्मा
5. भैंसों का चितेरा :– परमानन्द चोयल (कोटा)
6. गाँवों का चितेरा :– भूरसिंह शेखावत (बीकानेर) ; देशभक्त/शहीदों के चित्रण
7. कृपालसिंह शेखावत का गुरू – महू (सीकर)
8. पशुओं व भित्ति चित्रण का चितेरा – देवकीनन्दन (अलवर) "Master of Nature and Living object"

- महाराणा प्रताप के चित्रों का चित्रण – A.H. मूलर (जर्मन)
- भारतीय चित्रकला का स्वर्णकाल 17 वीं शताब्दी/जहांगीर का काल।
  राजस्थानी चित्रकला को 4 स्कूलों में विभाजित किया है:–

1. मेवाड स्कूल ऑफ पेन्टिग
- A. उदयपुर चित्रशैली
- B. नाथद्वारा चित्रशैली
- C. देवगढ चित्रशैली
- D. चावण्ड चित्रशैली

2. मारवाड स्कूल ऑफ पेन्टिग
- A. जोधपुर चित्रशैली
- B. जैसलमेर चित्रशैली
- C. बीकानेर चित्रशैली
- D. नागौर चित्रशैली
- E. बणी–ठणी (किशनगढ) चित्रशैली

3. ढूंढाड स्कूल ऑफ पेन्टिग
- A. आमेर चित्रशैली
- B. जयपुर चित्रशैली
- C. उनियारा (टोंक) चित्रशैली
- D. अलवर चित्रशैली
- E. शेखावाटी चित्रशैली

4. हाडौती स्कूल ऑफ पेन्टिग
- A. कोटा चित्रशैली
- B. बूंदी चित्रशैली

1. उदयपुर/मेवाड चित्रशैली

- प्रधान रंग:– पीला
- प्रारंभ काल:– राणा कुंभा
- स्वर्णकाल:– जगतसिंह– प्रथम
- प्रमुख चित्रकार:– साहबुद्दीन, रूकनुदीन, भैराराम, कृपाराम, मनोहर, देवन्दा, रामू, मुन्ना, घासीलाल
- मेवाड चित्रशैली को चित्रशैलियों की जननी कहा जाता है।
- अजन्ता शैली का सर्वप्रथम प्रभाव मेवाड चित्रशैली पर आया।
- चित्रकारों के प्रशिक्षण हेतु जगतसिंह – प्रथम ने 'कला विद्यालय' की स्थापना करवाई। जिसे चितेरों की ओवरी/तस्वीरों रो कारखाना कहा जाता है।
- राणा कुंभा को राजस्थानी चित्रकला का जनक कहा जाता है।
- सुपार्श्वनाथ चरित्रम्/सुपसनाह चरित – यह जैन ग्रंथ है।
  - (1422–23), राणा मोकल के काल में। चित्रकार – हीरानन्द
  - स्थान – देलवाडा (सिरोही) निर्देशन – देवकुल पाठक
- 1540 ई. में नानकराम ने 'भागवत पुराण' का चित्रण किया है।
- 1651 ई में मनोहर नामक चित्रकार ने मेवाड चित्रशैली में 'रामायण का चित्रण' किया है।
- वर्तमान में मुंबई संग्रालय में सुरक्षित है।
- मेवाड की मोनालिसा – ''रामायण का चित्रण'' है।

- विष्णु शर्मा द्वारा लिखित कहानी ''पचतंत्र का चित्रण '' मेवाड शैली में 'नुरदीन' नामक चित्रकार द्वारा किया गया है।
- इस कहानी में कलीला व दामीना नामक दो गीदडों का वर्णन है।इन दोनों पात्रों के बारे में सर्वप्रथम जानकारी – अलबरूनी ने दी थी। नीला आकाश, मछलीनुमा आंखें, बारहमासा ग्रंथ, कंदब वृक्ष, कोयल व सारस पक्षी, चाकोर पक्षी का चित्रण हुआ है।

2. नाथद्वारा चित्रशैली

- राजसमंद जिले में है। प्राचीन नाम – सिहाडा गाँव
- 10 फरवरी, 1672 में राजसिंह ने श्रीनाथ जी के मंदिर का निर्माण करवाया।
- प्रधान रंगः– हरा + पीला प्रारंभ कालः– राजसिंह स्वर्णकालः– राजसिंह
- पृष्ठ भूमि रंग :– नींबुआ, गुलाबी
- प्रमुख चित्रकार :– बाबा रामचंद्र नारायण, चतुर्भुज, नरोत्तम, हरदेव, देवकृष्ण, घासीराम, तुलसीराम, उदयराम, घनश्याम, विठ्ठलदास, चम्पालाल
- महिला चित्रकार – कमला व ईलायची, रूका देवी
- चित्र – राधाकृष्ण का चित्र, गाय का चित्रण, पिछवाईयों का चित्रण, कृष्ण लीला, केले के वृक्ष का चित्रण, आसमान में देवताओं का अंकन,
- यह एक धार्मिक चित्रशैली है।
- नाथद्वारा चित्रशैली को कृष्ण भक्ति की चित्रशैली कहा जाता है।

3. देवगढ चित्रशैली

- यह राजसमंद का एक ठिकाना है।
- ठिकाने की स्थापना – 1680 ई. द्वारिका प्रसाद के द्वारा।
- इस ठिकाने के शासक/रावत – 16 वें उमराव कहलाते है।
- प्रारंभ कालः– द्वारिका प्रसाद
- स्वर्णकालः– महाराणा जयसिंह
- इस चित्रशैली को प्रकाश में लाने का श्रेय – श्रीधर अंधारे को जाता है।
- मेवाड + मारवाड + ढूंढ़ाड का मिश्रण देवगढ चित्रशैली है। अतः इसे कोकटेल चित्रशैली कहते है।
- इस चित्रशैली में मोतीमहल व अजारा हवेली भित्ति चित्रों का आकर्षण है।
- इस चित्रशैली में हरे व पीले रंग में हाथियों की लडाई, राजदरबार दृश्य मुकुट, नीम्बाला वस्त्र इत्यादि है।
- प्रमुख चित्रकारः– कमल, चौखा, बैजनाथ, कंवला, भगता।

4. चावण्ड चित्रशैली

- यह शैली उदयपुर में है।
- प्रारंभ कालः– महाराणा प्रताप
- स्वर्णकालः– अमरसिंह– प्रथम
- प्रमुख चित्रकारः– निसारदीन/नासिरूद्दीन
- 1592 ई. – ढोला मारू का चित्रण – निसारदीन – प्रताप के काल में।
- 1605 – रागमाला सेट का चित्रण – निसारदीन – अमरसिंह – प्रथम के काल में।

5. बूँदी चित्रशैली

- राजस्थानी चित्रकला के विचारधारा के आरम्भिक केन्द्र।
- प्रधान रंगः– सुनहरा व चटकीला रंग
- प्रारंभ कालः– सुरजन सिंह हाडा
- स्वर्णकालः– उम्मेदसिंह – प्रथम/बिशनसिंह
- प्रमुख चित्रकारः– सूरजन, अहमद, डालू, भीखराम, श्रीकृष्ण
- इस चित्रशैली को पशु–पक्षियों की चित्रशैली कहा जाता है।
- इस शैली में अंग्रेज को अपनी प्रेमिका के साथ पियानो बजाते हुए दर्शाया गया है।
- छत्रसाल ने रंगमहल का निर्माण करवाया था।
- चित्रशाला महल का निर्माण – उम्मेदसिंह – प्रथम ने 1750 ई. में
- इसे भित्ति चित्रों का स्वर्ग कहा जाता है। इसमें उम्मेदसिंह को सूअर का शिकार करते हुए दिखाया (हरे रंग में) गया है।
- भावसिंह के काल में इस चित्रशैली पर भोग विलासिता/पाश्चात्य यूरोप/अंग्रेजी प्रभाव पडा था।
- रत्नसिंह हाडा चित्रकला प्रेमी होने के कारण जहाँगीर द्वारा 'सरबुलंद राय' की उपाधि दी गई थी।
- विशुद्ध राजस्थानी चित्रकला का प्रारम्भ इसी शैली से माना जाता है।
- यह शैली मेवाड चित्रशैली से प्रभावित है।
- इस चित्रशैली में ''रागभैरव'' एवम् ''रागिनी दीपक'' का चित्र चित्रित हुआ।

  ↓ ↓

  इलाहबाद संग्रहालय बनारस संग्रहालय में संग्रहीत है।
- भावसिंह के काल में – मतिराम – रसराज ग्रंथ
- अन्य प्रमुख चित्रः– बारहमासा, रागमाला, अन्तःपुर, चक्रदार पायजामा, खजूर वृक्ष, भोगविलास के चित्र चित्रित हुए।

6. कोटा चित्रशैली

- प्रधान रंगः– हल्का नीला
- प्रारंभ कालः– रामसिंह प्रथम (स्वतंत्र अस्तित्व)
- स्वर्णकालः– उम्मेदसिंह– प्रथम
- प्रमुख चित्रकारः– लच्छीराम, नूरमोहम्मद, डालू, रघुनाथ, लालचंद, गोविन्द
- इसे शिकार चित्रशैली भी कहते है।
- भगवान श्रीराम को हरिण का शिकार करते हुए व महिलाओं को शिकार करते हुए दिखाया गया है।
- झाला झालिमसिंह ने – झाला हवेली – भित्ति चित्रों का आकर्षण केन्द्र।
- डालूराम ने 1640 ई. में रागमाला सेट का चित्रण किया था।
- शेर, बतख एवं खजूर एवं मृगनयनि/आम्रपत्रों के समान आँखों का चित्र चित्रित है।
- वल्लभ संप्रदाय का प्रभाव भी देखा जाता है।

7. जैसलमेर चित्रशैली

- प्रधान रंगः– पीला + गुलाबी
- प्रारंभ कालः– हरराय भाटी
- स्वर्णकालः– अखैसिंह
- इस शैली पर किसी बाहरी शैली का प्रभाव नहीं पडा।